फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

रात को व्हर्लपूल अपनी शुद्धि करती है और रिजेक्शन के प्लास्टिक-पेन्ट-रसायन थोक में फैक्ट्री के सामने जलवा कर होलसेल प्रदूषण फैलाती है।

नई सीरीज नम्बर 148 अक्टूबर 2000

तलाशनी-बनानी हैं राहें

पापड़ फेरीवाला : "इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड में 22 साल से नौकरी कर रहा था। फैक्ट्री 5 साल से बन्द है और अभी तक हमें हिसाब नहीं मिला है। घर में क्लेश होता है इसलिये घर से निकल आता हूँ और पापड़ बेचता हूँ।"

भारत कारपेट्स मजदूर : "फैक्ट्री 1985 से बन्द है। अब तक हम 460 मजदूरों को हिसाब नहीं मिला है।"

आटोपिन वरकर : "फैक्ट्री में एक मजदूर की मृत्यु पर हुये मजदूरों के विरोध के सन्दर्भ में मैनेजमेन्ट ने मुझ विजय शंकर को भी सितम्बर 90 में नौकरी से निकाल दिया। मैंने श्रम विभाग में केस किया। मैनेजमेन्ट और लेबर ट्रिब्युनल ने झटकों-झटकों में आठ साल निकाल दिये। ट्रिब्युनल ने आखिरकार 1998 में निर्णय दिया। क्या फैसला दिया है यह मुझे आज, 6. 9. 2000 तक नहीं बताया गया है। बहुत भाग-दौड़ के बाद मैं यह ही पता कर पाया हूँ कि 28.10.98 को ट्रिब्युनल ने कागज चण्डीगढ भेज दिया है।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : "मैनेजमेन्ट ई.एस.आई. का रिटर्न जमा नहीं करवाती। इससे हमें मेडिकल छुट्टियों के तथा बाहर से खरीदनी पड़ती दवाइयों के पैसे नहीं मिलते। ई.एस.आई. वाले जो फार्म हमें पकड़ाते हैं उन्हें मैनेजमेन्ट भर कर नहीं देती। यही स्थिति प्रोविडेन्ट फण्ड के बारे में है। कुछ कहते हैं तो मैनेजमेन्ट नौकरी से निकालने की धमकी देती है।"

नौनिहाल वरकर : "एग्रीमेन्ट की बातें चल रही हैं पर हम लोग वर्क लोड बढाने के बदले कुछ पैसे के लिये बिल्कुल तैयार नहीं हैं। एग्रीमेन्ट हो या न हो, अन्य फैक्ट्रियों में मजदूरों के अनुभवों को देखते हुये हम ने वर्क लोड नहीं बढाने देने का निर्णय किया है।"

अलपाइन इम्पैक्स वरकर : "इतना ज्यादा शोषण है कि जिन्दगी में कुछ बचता ही नहीं। नौकरी क्या है कुछ कहते नहीं बनता।"

स्पैके फैक्स मजदूर : "हम 70 हैं – 25 परमानेन्ट, 20 कैजुअल और 35 ठेकेदारों के। पुराने वरकरों की ही दुर्गत है और नौकरियों का अब जो हाल है उसे देख कर नये वरकर उम्मीद ही क्या कर सकते हैं। नौकरियों से कुछ होने वाला नहीं है।"

सनराइज वरकर : "फैक्ट्री से जो नौकरी छोड़ कर चले गये उनकी तो दुर्गत हुई ही है, जो बचे हैं वे भी बहुत परेशान हैं। इससे पहले कभी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। हम जो सोचते थे उसके उलट हो रहा है।"

साधु फोरजिंग मजदूर : "'कोई आगे है, कोई पीछे है' के भ्रम दूर होने से हमारा भला ही हो रहा है। हम समझ रहे हैं कि न तो मजदूरों का कोई मसीहा है और ना ही किसी की हमें बैकिंग है। अब हर वरकर सोचता है और हर वरकर अपने-अपने ढँग से पैसे बढवाने तथा काम का बोझ कम करने के प्रयास करता है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "नौकरी अब है, कब चली जाये पता नहीं। हर एक की नौकरी पर हर समय खतरा बना रहता है। कम्पनियाँ प्रलोभनों और डर-भय के ताने-बाने से जाल बुनती हैं। अलग-अलग फैक्ट्रियों के मजदूर आपस में तालमेलों को बढा कर ही मैनेजमेन्टों के फरेबों को बेनकाब कर नाकारा बना सकते हैं।"

टैक्सको टूल्स मजदूर : "हालात ऐसी हैं कि कोई भी मजदूरों के लिये कुछ नहीं कर रहा और न ही किसी द्वारा ऐसा करने की उम्मीद की जा सकती है। ऐसे में मजदूरों को खुद सोचना ही पड़ेगा। जब तक हम बड़े पैमाने पर स्वयं विचार नहीं करेंगे कि हमारे हित में क्या करना चाहिये और किस प्रकार से कदम उठाने चाहियें तब तक कुछ होने वाला नहीं है। बहुत सारे लोगों के सोचने-विचारने से ही कुछ होगा।"

ओखला से मजदूर : "इधर मैनेजमेन्टों द्वारा मजदूरों का खून लेना भी बढ रहा है। बात ब्लड बैंक में रक्त दिलवा कर वाहवाही लेने वाली ही नहीं है। साहबों का कोई रिश्तेदार बीमार होता है और रक्त की जरूरत पड़ती है तो उसके प्रियजनों का नहीं बल्कि मजदूरों का खून लिया जाता है। ओखला फेज 1 में ए–4, डी–28 और डी–58 स्थित फैक्ट्रियों के मजदूरों से साहबों के बीमार रिश्तेदारों के लिये खून लेने की घटनायें बढ रही हैं।"

वाह! स्वागत!!

एस्कोर्ट्स मजदूर : " अप्रेन्टिसों से मैनेजमेन्ट पूरा प्रोडक्शन लेती थी। उत्पादन कम होने पर उनसे सवाल-जवाब होते थे। लगता है कि अप्रेन्टिसों ने आपस में तालमेल बढाये। धड़ल्ले से टूल टूटने लगे और मशीनें ब्रेक डाउन होने लगी। सुपरवाइजर कुछ कहते तो अप्रेन्टिसों का सीधा-सा जवाब होता : 'जो होना था वह हो गया। अब बताओ क्या करना है। हमें सीखने यहाँ भेजा है। हमें आता नहीं है इसलिये हमें सिखाओ।' सुपरवाइजरों और मैनेजरों को अप्रेन्टिस सिरदर्द दीखने लगे और साहब लोग लड़कों को मशीनों पर लगाने से बचने लगे। अब अप्रेन्टिस सीखने के दौरान थोड़ा-बहुत प्रोडक्शन करते हैं तो करते हैं। परमानेन्ट होने के चक्कर में तन तोड़ने वाली बात तो आई-गई हो ही गई थी, डरा-धमका कर निचोड़ने में लगी मैनेजमेन्ट पर अप्रेन्टिसों ने मजे से लगाम लगा दी।"

वर्कशॉप वरकर : "इस समय मुजेसर में नवभारत इन्डस्ट्रीज में काम कर रहा हूँ। पैसे बहुत कम हैं – महीने के 1200-1600 रुपये। जुलाई का वेतन आज 11 सितम्बर तक नहीं दिया है। पार्टियों को चेक देते रहते हैं और वरकर माँगते हैं तो जवाब होता है : 'पैसे नहीं हैं!' ठीक है..... एक बचा रहे बच्चू को हम लोग दो की चपत लगाते हैं।"

लिसिलेवल आटोलेक मजदूर : "30 अगस्त को रात की ड्युटी के बाद एक कैजुअल वरकर की सड़क पर एक्सीडेन्ट में मृत्यु हो गई। मजदूरों ने दाहसंस्कार में शामिल होने के लिये छुट्टी माँगी लेकिन मैनेजमेन्ट ने छुट्टी देने से इनकार कर दिया। इस पर कई वरकर छुट्टी करके दाहसंस्कार में गये। बौखलाई मैनेजमेन्ट ने 15-16 मजदूरों को आरोप पत्र दिये हैं।"

ओल्ड फाटक पर वरकर : "फैक्ट्री का नाम ध्यान में नहीं रहा। व्हर्लपूल के लिये वहाँ मैगनेट बनते हैं। पिछले साल की बात है। दिवाली पर कैजुअल व ठेकेदारों के वरकरों को मैनेजमेन्ट गिफ्ट नहीं दे रही थी। इस पर परमानेन्ट वरकर अड़ गये कि पहले कैजुअलों व ठेकेदारों के वरकरों को गिफ्ट दो तभी हम लेंगे। मैनेजमेन्ट को सब मजदूरों को गिफ्ट देनी पड़ी।"

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

जे.एम.ए. मजदूर : " परमानेन्ट वरकरों को तो इस बार 7 तारीख को तनखा दे दी लेकिन कैजुअल वरकरों को तथा स्टाफ को अगस्त का वेतन आज 12 सितम्बर तक नहीं दिया है।"

चाँद इन्डस्ट्रीज वरकर : "अगस्त का वेतन आज 14 सितम्बर तक नहीं दिया है। फण्ड कटता है पर फण्ड स्लिप नहीं मिलती। इधर 4 साल से बोनस नहीं दिया है। ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं।"

लालडी मजदूर : "अगस्त की तनखा आज 14 सितम्बर तक नहीं दी है। डी.ए. नहीं देते।"

एनकॉन थर्मल इंजिनियरिंग वरकर : "तीन साल से वार्षिक वेतन वृद्धि नहीं दी है। फैक्ट्री में लैट्रीन- बाथरूम और पीने के पानी तक की व्यवस्था नहीं है। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट सिंगल रेट से करते हैं। हैल्परों को 1200- 1500 और टैक्निशियनों को 1800- 2200 रुपये ही वेतन देते हैं।"

थर्मोस्टील मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने अगस्त की तनखा आज 12 सितम्बर तक नहीं दी है।" लगता है। शिफ्ट में तो चाय देते ही नहीं, 4 घण्टे का ओवर टाइम लगवाते हैं तब भी चाय तक नहीं देते। ओवर टाइम काम के पैसे भी सिंगल रेट से देते हैं।"

गुडईयर मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों को पूरी छूट दी हुई है। आज 19 सितम्बर हो गया है और ठेकेदार ने हमारी अगस्त की तनखा अभी तक नहीं दी है।"

नेपको बेवल गियर वरकर : "ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं। जो देते हैं वह भी समय पर नहीं देते – अगस्त का वेतन हमें आज 19 सितम्बर तक नहीं दिया है।"

कर्मा इंजिनियरिंग मजदूर : "ठेकेदार के वरकर करार दे कर वेतन 1200 रुपये महीना है। इन 1200 में से 250 रुपये ई.एस.आई. और फण्ड के नाम पर काट लेते हैं। अगस्त के वेतन के नाम पर इस प्रकार जो 950 रुपये देने हैं वे भी मैनेजमेन्ट ने आज 19 सितम्बर तक हमें नहीं दिये हैं।"

का पैसा जमा करवा दिया है। हम फण्ड दफ्तर जाते हैं तो वहाँ कहते हैं कि पैसा जमा नहीं करवाया है। हम मैनेजमेन्ट की बात बताते हैं तो पी.एफ. वाले कहते हैं कि लिखवा कर ले आओ। लिख कर मैनेजमेन्ट देती नहीं। आखिर पी.एफ. वाले फण्ड जमा नहीं करने के लिये मैनेजमेन्ट के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं करते ?"

लखानी शूज वरकर : "12 घण्टे की ड्युटी है। रात 8 से सुबह 8 तक पलक भी नहीं झपकने देते।"

प्रिया गोल्ड बिस्कुट मजदूर : "सूरजपुर में दादरी रोड़ पर है। फैक्ट्री गेट पर बोर्ड- वोर्ड कुछ नहीं है। चेयरमैन तथा जनरल मैनेजर एक हैं पर बिस्कुट, आटा, गत्ता और छपाई प्लान्टों के अलग- अलग नाम रखे हैं। कुल 600 मजदूर हैं। फैक्ट्री में गन्दगी बहुत ज्यादा है। चेयरमैन के दो बेटे और जनरल मैनेजर बहुत गदर करते हैं – मजदूरों को गालियाँ देना और मारना- पीटना इनका रोज का काम है। प्रोविडेन्ट फण्ड और ई.एस.आई. के पैसे सब वरकरों की तनखा

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट- बोल्ट होते हैं; नालियाँ- सीवर होते हैं; कई- कई ऑपरेशन होते हैं; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✱ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो; ✱ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✱ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये; ✱ अरजेन्ट मचा रखो हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

अतुल ग्लास वरकर : "अगस्त का वेतन आज 16 सितम्बर तक नहीं दिया है। स्टाफ को तो जून की तनखा अब देनी शुरू की है। पहली सितम्बर से काम ढीला है – दो डिपार्टमेन्ट ही चल रही हैं।"

ओरियन्ट फैन मजदूर : "70 कैजुअल वरकर हैं जिनसे 10 घण्टे रोज ड्युटी करवाते हैं पर पैसे 8 घण्टे के हिसाब से ही देते हैं।"

इण्डिया फोर्ज वरकर : "टोटल ठेकेदारी है। निचोड़ डालते हैं और 40 रुपये की दिहाड़ी है। ठेकेदार हर समय सिर पर खड़े रहते हैं – पानी पीने, पेशाब करने, बीड़ी- तम्बाकू के समय भी ठेकेदार बार- बार टोकते हैं।"

सुपर स्विच मजदूर : "150 कैजुअल वरकर हैं जिनको न ई.एस.आई. कार्ड दिया है और न फण्ड की पर्ची। ओवर टाइम के पैसे डबल की जगह सिंगल रेट से देते हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "यामाहा (राजदूत) प्लान्ट में कोई ठेकेदार 55 तो कोई ठेकेदार 60 रुपये की दिहाड़ी देता है – साप्ताहिक छुट्टी तो देते ही नहीं। छह महीने का फार्म भरते हैं पर महीने में 8- 10 दिन की ही दिहाड़ी मिलती है। थिनर से पेन्ट साफ करने का काम तो बहुत ही गन्दा है – नशा हो जाता है और सिर चकराने

कर्निता टैक्सटाइल्स वरकर : "अगस्त की तनखा मैनेजमेन्ट ने आज 13 सितम्बर तक नहीं दी है।"

सुपर फाइबर मजदूर : "बहुत गन्दा काम है। रोज 10 घण्टे की ड्युटी है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। इस प्रकार महीने के तीसों दिन खटने के बदले 2400 रुपये देते हैं।"

कारटैक्स डाइंग वरकर : "खूब दबा कर गालियाँ देते हैं। 12 घण्टे ड्युटी के 1600 रुपये बताते हैं लेकिन साप्ताहिक छुट्टी के नाम पर पैसे काट कर हमारे हाथ में 1300- 1400 रुपये ही देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं।"

त्रिकुटा मैटल मजदूर : "तनखा 1500 रुपये ही देते हैं और वह भी 10 तारीख के बाद।"

ओसवाल इलेक्ट्रिकल वरकर : "परमानेन्ट 7 हैं और कैजुअल- ठेकेदारों के 198 मजदूर हैं। एक वरकर के नाम के आगे 6 महीने ठेकेदार के हस्ताक्षर होते हैं और फिर 6 महीने कम्पनी के। यही ठेकेदार के वरकर और कैजुअल वरकर में फर्क है। आठ- आठ, दस- दस साल से लगातार काम कर रहे वरकर लेबल की यह अदला- बदली झेल रहे हैं। ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं।"

सिराको आटो मजदूर : "मैनेजमेन्ट कहती है कि 1984- 85- 86 का प्रोविडेन्ट फण्ड में से काटते हैं लेकिन फण्ड कभी जमा कराते हैं और कभी नहीं तथा वह भी एक चौथाई वरकरों का ही। ई.एस.आई. कार्ड मात्र 25 मजदूरों को दिये हैं।"

आटोपिन वरकर : "जुलाई का वेतन 7 सितम्बर को देना शुरू किया और आज 14 सितम्बर तक भी सब वरकरों को नहीं दिया है। कैजुअल वरकरों की तो तीन महीनों की तनखा नहीं दी है। मई, जून, जुलाई और अगस्त में करवाये ओवर टाइम काम के पैसे आज तक नहीं दिये हैं। ड्युटी के बाद रोज किसी वरकर को 4 तो किसी को 8 घण्टे जबरन रोकते हैं। वरकर मना करता है तो उसे धकेल कर अन्दर ले जाते हैं और ओवर टाइम काम करवाते हैं। एक कैजुअल वरकर ने एक दिन ओवर टाइम पर रुकने से मना किया तब मैनेजमेन्ट के गुण्डे ने उसे पीटा।"

नूकेम मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने पीछे जो गड़बड़- घोटाले किये वो तो हैं ही, इधर जुलाई व अगस्त महीनों का वेतन नूकेम मशीन टूल्स में हमें आज, 19 सितम्बर तक नहीं दिया है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

भुगत रहे हैं , समझ रहे हैं

मनचूर इन्डस्ट्रीज मजदूर : " पिछली एग्रीमेन्ट में वर्क लोड बढाया था। इस बार एग्रीमेन्ट में और भी ज्यादा वर्क लोड बढाने की बात है। अब आधे वरकर ही परमानेन्ट बचे हैं, बाकी कैजुअल व डेली वेज हैं। अपने माफिक माहौल बनाने के लिये मैनेजमेन्ट पेंच कस रही है – एक दिन की छुट्टी पर लैटर पकड़ा रही है, गिफ्ट खत्म करने और बोनस को 20 से 18 प्रतिशत करने की चर्चा छेड़ी है। हमारे कुछ भोले साथियों ने कम्पनी की वफादारी दिखाई: मैनेजरों द्वारा कम्पनी की बिजली को चोरी से अन्य कम्पनियों को बेचने की बात मैनेजिंग डायरेक्टर को बताई तो बड़े साहब ने बात देवताओं के न्याय पर डाल कर रफा-दफा कर दी।"

सैनल्यूब वरकर : " एक मिनट लेट कह कर एक मजदूर का गेट रोक मैनेजमेन्ट ने पँगा लिया और जुगलबन्दी में यूनियन ने हड़ताल कर दी। हड़ताल 3 मार्च से 12 मई तक चली। मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौता हुआ: ढाई महीने की तनखा से हम ने हाथ धोये; तीन वरकर बाहर हुये; 5-10-15 वर्षों की सर्विस पर मिलती साइकिल-टी वी-फ्रिज वाली गिफ्ट बन्द कर दी; एल टी ए के रूप में प्रति वर्ष मिलते 900 रुपये खत्म कर दिये; बोनस जो कि 20 से 15 होते हुये 11 प्रतिशत तक लुढक गया था उसे 8.33 के न्यूनतम स्तर पर पटक दिया। अब नये गुल खिलाने के लिये तीन साल वाली मैनेजमेन्ट-यूनियन सैटलमेन्ट का समय सिर पर है।"

टालब्रोस मजदूर : " ठेकेदारों के वरकरों को 1400 रुपये महीना देते हैं। सैक्टर 6 के प्लान्टों में 300-350 कैजुअल व ठेकेदारों के वरकर हैं और 191 परमानेन्ट। जुगत पर जुगत भिड़ा कर प्लाट 74 में हम पुराने परमानेन्टों ने कुछ चीजें हासिल की थी। बगल में प्लाट 75 के नौजवान परमानेन्ट हम से ज्यादा काम करते हैं और कम पैसे पाते हैं। जुलाई में मैनेजमेन्ट ने पँगा ले कर तिकड़म से दोनों प्लान्टों से वरकरों को बाहर किया। अगस्त में फैक्ट्री में प्रवेश पर सब परमानेन्टों की 22 दिन की दिहाड़ी मारी गई और प्लाट 74 के हम 106 परमानेन्टों का तो तीन हजार रुपये महीना इनसेन्टिव भी मैनेजमेन्ट ने खत्म कर दिया। लगता है कि प्लाट 75 में परमानेन्टों को चुप करने और प्लाट 74 में हमें काटने के लिये यह चौपड़ बिछी थी।"

सेक्युरिटी गार्ड : " हम 80 गार्ड केन्द्र सरकार के एस.टी.सी. दफ्तर पर ड्युटी देते हैं। हमें सुपर कमाण्डो सेक्युरिटी सर्विस ने यहाँ लगाया है। सरकार एस.टी.सी. को 5000 रुपये प्रति गार्ड देती है। एस.टी.सी. प्रति गार्ड 3500 रुपये ठेकेदार को देती है। ठेकेदार हमें 2085 रुपये महीना ही देता है। पैसे काटते हैं लेकिन न तो हमें ई.एस.आई. कार्ड देते और न फण्ड की स्लिप। अगस्त का वेतन हमें आज 15 सितम्बर तक नहीं दिया है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " उसी काम के एक को बारह हजार और दूसरे को 1740 रुपये! बल्कि, कैजुअल वरकरों पर तो ज्यादा भी और गन्दा भी काम लादते हैं। थर्ड प्लान्ट में फिर बहुत कैजुअल भर लिये हैं – 500 से ज्यादा। छह महीने के नाम से भर्ती करते हैं और हर समय निकाल देने की धमकियाँ देते हैं। जब एक शिफ्ट में 52 ट्रैक्टर असेम्बल कराते थे तब हम कैजुअलों को 72 रुपये देते थे, यानि, एक रुपया 40 पैसे प्रति ट्रैक्टर। अब 74 ट्रैक्टर प्रति शिफ्ट असेम्बल कराते हैं और हमें एक रुपया प्रति ट्रैक्टर की दिहाड़ी देते हैं! एनसीलरी प्लान्ट में भी यही हाल है। पहले जहाँ 840 कारब्युरेटर बनवाते थे अब वहाँ 1240 बनवाते हैं पर हम कैजुअल वरकरों की दिहाड़ी वही 74 रुपये है।"

एलसन कॉटन वरकर : " दाढी-मूँछ नहीं आई थी तब से नौकरी कर रहा हूँ। एलसन कॉटन मिल 7 साल से बन्द पड़ी है और इस दौरान रात को चौकीदारी करता हूँ तथा शाम को एक अखबार बाँटता हूँ तब जा कर दाल-रोटी निकलती हैं। अखवार वालों से रोज वास्ता पड़ता है और कोशिश बहुत करता हूँ कि मजदूरों की बातें अखबारों में छपें पर छापते ही नहीं। अखबारों में काम करते कुछ लोग तो साफ-साफ कह देते हैं कि वे रोटी और सुरक्षा के चक्कर में मजदूरों की बातें लिखते ही नहीं और जब-तब लिख कर दे भी देते हैं तो अखबारों की मैनेजमेन्टें धन्धे व भाईचारे के चक्कर में मजदूरों की बातें छापती नहीं।"

गुडईयर मजदूर : " नोटिस नहीं लगा पर ले ऑफ की चर्चा है। गोदाम भर गये हैं – सवा साल आगे तक का उत्पादन इकट्ठा हो गया बताते हैं। आजकल फैक्ट्री में काम ढीला-ढाला है – कुछ मशीनें बन्द रहती हैं।"

फरीदाबाद फैब्रिकेटर मजदूर : " हम 180 में से 146 को ठेकेदारों के वरकर बताते थे पर कोई ठेकेदार नहीं थे – कम्पनी के सुपरवाइजरों को ही ठेकेदार कह देते थे। ई.एस.आई. और फण्ड कम्पनी के नाम से कटते थे। चार-पाँच साल की लगातार सर्विस के बाद ब्रेक दे कर फिर रख लेते थे। प्रोविडेन्ट फण्ड निकलवाने वाले फार्म पर हस्ताक्षर कम्पनी का मैनेजर करता था। हम जानते थे कि हम सब परमानेन्ट हैं। पीने के पानी तक का प्रबन्ध फैक्ट्री में नहीं और गाली-गलौज थोक में। कुछ राहत के लिये हम ने इस साल फरवरी में एक यूनियन का पल्लू पकड़ा। कोई खिचड़ी पकी। अचानक एक से 6 जून के बीच मैनेजमेन्ट ने धमका कर 144 मजदूरों से इस्तीफे लिखवाये तथा उन सब को 1. 6. 2000 से एच. आई.एस. एस. के वरकर के तौर पर भर्ती दिखा कर ठेकेदार के वरकर बना दिया। तब भी और बाद में भी यूनियन इस बारे में बिल्कुल चुप! परमानेन्ट कहे जाने वाले 30 मजदूरों के हित में आवाज उठाने के नाम पर यूनियन ने 10 जुलाई से नौटंकी शुरू की। मैनेजमेन्ट ने 30 में से 7 को निलम्बित कर दिया है और श्रम अधिकारी के यहाँ तारीखों वाली कवायद चल रही है। लगता है कि मैनेजमेन्ट ने जो जाल बुना है उसके ताने-बाने हैं: 180 में से 25 को यूनियन के जरिये मुट्ठी में रखना तथा ठेकेदार के जरिये 150 के अस्तित्व को छिपाना।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " टीम वर्क कहते हैं लेकिन चार को बैठा देते हैं और दो से ही काम करवाते हैं। फिर जिन दो को काम में लगा रखा होता है उन्हें ही और काम भी बता देते हैं तथा जो चार बैठाये होते हैं उन्हें बैठाये ही रखते हैं। एग्रीमेन्ट द्वारा वर्क लोड में भारी वृद्धि के बाद अब इस प्रकार मजदूरों को फालतू दिखा कर मैनेजमेन्ट सोचती है कि डर कर, परेशान हो कर हम नौकरी छोड़ देंगे। मैनेजमेन्ट की चाल हम समझ रहे हैं। हम शान्त हैं और नौकरी छोड़ कर तवे से चूल्हे में नहीं कूदेंगे।

" यामाहा (राजदूत) प्लान्ट में नई वी.आर. एस. का टाइम 1 से 15 सितम्बर था। मैनेजरों ने एक-एक करके चार-चार बार मजदूरों को कैबिनों में बुलाया और इस्तीफे लिखने के लिये दबाव डाला। पहली से 15 सितम्बर तक कोई लीडर प्लान्ट में दिखाई नहीं दिया।"

योगाभ्यास

टेकमसेह मजदूर : " मनोवैज्ञानिक द्वारा व्यवहार की ट्रेनिंग; डॉक्टर द्वारा आत्म-चेतना की ट्रेनिंग; विशेषज्ञों द्वारा 5-एस की ट्रेनिंग.... सुरक्षा की ट्रेनिंग.... कॉस्ट कन्ट्रोल ट्रेनिंग.... और गेरुआधारियों द्वारा योगाभ्यास! लगातार चार ट्रेनिंग कोर्स चला रही गुडईयर और ट्रेनिंग सरगना आयशर कन्सलटेन्सी से टेकमसेह ट्रेनिंग द्वारा मजदूरों का कचूमर निकालने में पीछे नहीं है। उत्पादन बढाओ और लड्डु खाओ, कोल्ड ड्रिन्क्स पीओ की सीमाओं को मैनेजमेन्टें अच्छी तरह जानती हैं इसलिये.... इसलिये योगाभ्यास। मैनेजमेन्टों का आंकलन है कि तनाव मुक्त मजदूरों से ज्यादा उत्पादन करवा सकती हैं। इसलिये जब वरकर खाली होते हैं तब दो साधु योगाभ्यास करवाते हैं। उत्पादन बढाने के लिये मैनेजमेन्ट का जोर स्टेटर असेम्बली और कम्प्रेसर असेम्बली पर है। यह दोनों विभाग एयर कन्डीशन्ड् हैं। व्हाइट रूम कहे जाने वाले कम्प्रेसर असेम्बली में साधु डेरा जमाते हैं।"

झरोखा

तेल पर मारा- मारी करते चोरों ने एक- दूसरे की कुछ पोल- पट्टी खोली है। एक दलील है कि तेल की ऊँची कीमत के लिये तेल उत्पादक क्षेत्रों की सरकारों की चौथ वसूली जिम्मेदार है। इसकी काट करती दलील आँकड़े पेश कर कहती है कि पैट्रोल- डीजल की ऊँची कीमत का कारण कच्चा तेल खरीदते क्षेत्रों की सरकारों द्वारा उस पर आगे लगाये जाते भारी टैक्स हैं। पैट्रोल की कीमत का कहीं 50 तो कहीं 75 प्रतिशत भाग यह आगे वाले टैक्स हैं।

दोनों क्षेत्रों की सरकारों के टैक्सों को समाप्त करने पर मिट्टी का तेल चार आने लीटर और पैट्रोल अठन्नी का लीटर। रुपये- पैसे की भाषा का ही इस्तेमाल जारी रखें और टैक्सों के संग- संग कम्पनियों की चौथ वसूली भी खत्म कर दें तो मिट्टी का तेल- डीजल- पैट्रोल 5 पैसे- 10 पैसे प्रति लीटर।

बिना वर्दी वाले गुण्डे

स्ट्ड्स हेल्मेट मजदूर : "वरकर निकालना चाहते हैं। दो महीनों से तनखा नहीं दी है। मैनेजमेन्ट 6 सितम्बर को तीन कारों में भर कर गुण्डे लाई और गुण्डों ने मजदूरों पर हमला बोल दिया। हम ने मुकाबला किया। गुण्डों के सरगना को गिरा दिया तब उसे पड़ा छोड़ कर उसके पट्ठे भाग गये। पुलिस आई और टूटे- फूटे पड़े गुण्डे सरगना को उठा कर अस्पताल ले गई।"

कैनन इण्डिया वरकर : " 7 सितम्बर को मैनेजमेन्ट के गुण्डे पहले तो गाड़ी फैक्ट्री के अन्दर ले गये और फिर बाहर निकले तो गेट के पास गुण्डागर्दी की। यह पता लगने पर कि वे कैनन इण्डिया के वरकर हैं जिन्हें मैनेजमेन्ट ने बाहर किया हुआ है, गुण्डों ने दो मजदूरों को फैक्ट्री गेट पर पीटना शुरू कर दिया। एक वरकर ने भाग कर जान बचाई। दूसरे वरकर, जगदीश को बेहोश कर मैनेजमेन्ट के गुण्डे गाड़ी में बैठ कर चले गये। मजदूरों ने जगदीश को सरकारी अस्पताल में दाखिल करवाया और पुलिस में एफ.आई.आर. दर्ज करवाई। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री के अन्दर मीटिंग कर कहा कि इस गुण्डागर्दी से स्थानीय मैनेजमेन्ट का कुछ लेना- देना नहीं है और कि कम्पनी के लुधियाना स्थित एक साहब ने यह करवाया है।"

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती

टेकमसेह वरकर : "उन मैनेजरों ने छँटनी के लिये मजदूरों को डराने, धमकाने, बरगलाने की जी- तोड़ कोशिशें की थी। तालाबन्दी कर 1400 में से 450 मजदूरों को निकाल दिया गया। कम्पनी के लिये गन्दे से गन्दा, नीच से नीच काम करने वाले मैनेजरों को काम हो जाने के बाद नौकरी से निकाल दिया है। नब्बे प्रतिशत, बल्कि 100 परसैन्ट ही कहिये, नये नौजवान मैनेजर अब कम्पनी में हैं।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✱ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

बी. आई. एफ. आर.

श्रीमान चेयरमैन, बी. आई. एफ. आर., नई दिल्ली

विषय : झालानी टूल्स (इण्डिया) लिमिटेड को वाइन्ड अप करने, समेट देने के 17.7.2000 के बी. आई. एफ.आर. के आदेश के बाद भी कम्पनी में जारी लूट।

महोदय,

हम झालानी टूल्स (इण्डिया) लिमिटेड के फरीदाबाद स्थित प्लान्टों के मजदूर हैं। बी. आई. एफ. आर. द्वारा 17. 7. 2000 को कम्पनी को वाइन्ड अप करने का आदेश देने के बाद बी. आई. एफ. आर./ऑपरेटिंग एजेन्सी द्वारा आगे कोई कार्रवाई नहीं करने के दृष्टिगत कम्पनी की सम्पत्ति के लूटे जाने की तरफ हम आपका ध्यान खींचना चाहते हैं तथा तत्काल समुचित कदमों की अपेक्षा करते हैं।

श्रीमान, 1987 में बीमार घोषित झालानी टूल्स इन 13 वर्षों से बी. आई. एफ. आर. की देख- रेख में है। इस दौरान की कुछ बातों पर कृपया आप गौर करें :

— कम्पनी को स्वस्थ करने वाली बी. आई. एफ. आर. द्वारा 1988 में स्वीकृत स्कीम को स्वयं बी. आई. एफ. आर. ने 1992 में फेल घोषित किया। इस स्कीम के दौरान मैनेजमेन्ट ने हमारे ग्रेच्युटी खाते में जमा पैसे निकाल लिये तथा कम्पनी की सम्पत्ति बेची। हमारे ग्रेच्युटी के पैसे हड़प लिये जाने का नतीजा है रिटायर हुये मजदूरों को ग्रेच्युटी भी नहीं दी जाना। ऐसे में भूखमरी से परेशान रिटायर हुये मजदूर श्री इन्द्रराज ने 26 जुलाई को जहर खा कर आत्महत्या कर ली।

— कम्पनी को स्वस्थ करने के लिये बी.आई.एफ.आर. ने 1992 में दूसरी स्कीम पर मोहर लगाई और फिर स्वयं बी.आई.एफ. आर. ने 1996 में इस स्कीम को भी फेल घोषित किया। इस दौरान मैनेजमेन्ट ने हमारे प्रोविडेन्ट फण्ड के 2 करोड़ 37 लाख रुपये जमा नहीं करवाये।

— 1996 में दूसरी स्कीम को फेल करार देते समय बी. आई. एफ. आर. ने मैनेजमेन्ट बदलने के लिये एडवरटाइजमेन्ट देने का आदेश भी दिया था। एडवरटाइजमेन्ट नहीं दी गई और स्वयं बी. आई. एफ. आर. कुम्भकर्णी नींद सो गई लगती है क्योंकि इसके बाद जनवरी 2000 में आ कर बी. आई. एफ. आर. ने फिर मीटिंग की तथा फिर मैनेजमेन्ट बदलने के लिये एडवरटाइजमेन्ट देने का आदेश दिया।

— 1996 से जनवरी 2000 के बीच बी. आई. एफ. आर. की दीर्घ निन्द्रा के दौरान मैनेजमेन्ट ने हमें 20 महीने 20 दिन की तनखायें तो दी ही नहीं और 24 महीनों की जो तनखायें दी उसमें महीने- भर के वेतन के तौर पर 50 रुपये - 250 रुपये- 700 रुपये- 1100 रुपये जैसी मात्रायें सैंकड़ों मज़दूरों को दी गई।

— बी. आई. एफ. आर. द्वारा जनवरी 2000 में दिये गये एडवरटाइजमेन्ट के आदेश पर अमल हुआ पर मीटिंग मई माह में करने की बजाय 17 जुलाई को की गई। मैनेजमेन्ट ने 6 और महीनों के वेतन हमें नहीं दिये।

— 17.7. 2000 को बी. आई. एफ. आर. ने कम्पनी को वाइन्ड अप करने का आदेश दिया। इस आदेश पर अभी तक आगे कोई कार्रवाई बी. आई. एफ. आर. /ऑपरेटिंग एजेन्सी द्वारा नहीं की गई है। ऐसे में मैनेजमेन्ट को लूट जारी रखने की छूट रही है। और श्रीमान, 11. 9. 2000 से तो बिना ई. एस. आई. के ही उत्पादन करवाया जा रहा है — खुलेआम कम्पनी की सम्पत्ति को लूटा जा रहा है।

श्रीमान, कम्पनी की सम्पत्ति को लूटने का एक परिणाम है कम्पनी की सम्पत्ति का 45 करोड़ रुपये की रह जाना जबकि कम्पनी की देनदारी 250 करोड़ रुपये के आस- पास है — फरीदाबाद प्लान्टों में कार्यरत 2000 मज़दूरों के ही 60 करोड़ रुपये कम्पनी को देने हैं। यहाँ के स्टाफ तथा कुण्डली, औरंगाबाद और जालना प्लान्टों के वरकरों के भी करोड़ों रुपयों की देनदारी कम्पनी पर है।

उपरोक्त के दृष्टिगत हम आपको यह पत्र देने आये हैं। हम अपेक्षा करते हैं कि आप लूट को रोकने के लिये तत्काल कार्रवाई करेंगे।

श्रीमान, हम ने बी. आई. एफ. आर. के 17.7. 2000 के आदेश की प्रति माँगी तब हमें कहा गया कि डाक से भेज देंगे पर अभी तक प्रति हमें मिली नहीं है। कृपया 17.7. 2000 के आदेश की प्रति हमें दें।

दिनांक 15. 9. 2000 — हम हैं झालानी टूल्स (इण्डिया) लिमिटेड के फरीदाबाद प्लान्टों के मजदूर

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।